डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmtjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–21 अप्रैल, 2020)

भक्तिकालीन साहित्य में 'रामचरितमानस' का महत्त्व

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' विष्व–साहित्य का एक उत्कृष्ट महाकाव्य है। काषी में इसकी रचना 1574 ई0 में हुई थी। यह वेद,षास्त्र, पुराण तथा अनेक भारतीय धर्म और संस्कृति के ग्रंथों का सार लेकर लिखा गया है। इसमें भारतीय जीवन और आदर्षों की सुन्दर समीक्षा तथा उदात्त मानव जीवन की परिकल्पना की गई है। यह चरित्र प्रधान रचना है, जिसमें चरित्रों को उद्घाटित करने के लिए इतिहास, धर्म, संस्कृति, वेद, पुराणों आदि का समन्वय किया गया है। राम के व्यक्तित्व में मर्यादा पुरुषोत्तम और ब्रह्मत्व का समन्वित रूप देखने को मिलता है। 'रामचरितमानस' हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है।

तुलसीदास लोक कवि होने के साथ काव्य चेतना के सफल मॉनिटर भी हैं। उनके काव्य की धूरी 'रामचरित मानस' है और 'मानस' की धूरी उसका रूप-विधान। इसके चारों ओर मानव जीवन के अनेक मार्मिक प्रसंगों, संवादों, मौलिक कल्पना, षक्ति, षील, सौंदर्य और सूझ-बूझ की गहराई भरे पड़े हैं, जो वर्तमान समय में भी प्रासंगिक हैं। उनकी काव्य-यात्रा में अनेक पडाव, अनेक रंग, अनेक अर्थ छवियां हैं जो मानस को किसी न किसी रूप में विराट् श्रृंगार करते हैं तथा उसे अर्थपूर्ण और सार्थक बनाते हैं। उन्होंने भाषा-काव्य को अनेक शषाओं के अनुसरण से समृद्ध किया।

'रामचरित मानस' शरतीय संस्कृति और समाज व्यवस्था की एक क्लासिक कृति है। वह अपने समय तथा समाज की वैधानिक और वाचिक या जुबानी संस्कृति की सजग चेतना और शविष्य की गहरी चिंता का वाहक है। यह रचना अपने आप में सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन का रूप है। संस्कृति, समाज और देष के विभिन्न रूपों में यह कृति जनता के सामाजिक जीवन की वास्तविकताओं और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है। इसी से इस महाकाव्य का रूप-विधान पवित्र 'सरोवर' की तरह अभिव्यक्त है। सात काण्डों में विभक्त यह ग्रंथ अवधी भाषा में दोहा–चौपाई छंदों में लिखा गया है। इसके अलावे अनेक मात्रिक छंदों और वार्णिक छंदों का भी उपयोग मिलता है। मंगल की कामना से प्रेरित होकर तुलसी ने प्रत्येक कांड के आरंभ में संस्कृत भाषा में 'मंगलाचरण' का विधान किया गया है।

'रामचरितमानस' में मुख्य रूप से राम के चरित्र का उत्कृष्ट नायक के रूप में वर्णन किया गया है। सहयोगी चरित्र के रूप में भरत के उदात्त, त्यागी, सुषील और समर्पित चरित्र का वर्णन है। लक्ष्मण और हनुमान के चरित्र का वर्णन दास्य भाव, त्यागी, वीर और आवष्यकतानुकूल क्रोधी रूप का है। सीता पतिव्रता भारतीय पारंपरिक नारी के रूप में चित्रित

हैं। दषरथ और कौषल्या माता–पिता तथा राजा–रानी के रूप में चित्रित हैं। रावण का चरित्र अपहरणकर्ता, योद्धा और निरंकुष रूप में है। प्रकृति, पषु–पक्षी आदि के चरित्रों का उद्‌घाटन मार्मिक है। बंदर सेना के रूप में, सुग्रीव सहयोगी मित्र के रूप में और विभीषण समर्पित भक्त के रूप में चित्रित हैं। जाम्बवंत गुरू सदृष हैं। इन सभी चरित्रों का जिस रूप में वर्णन है, वे भव्य, समर्थ, सजीव और प्रभावषाली हैं। उनके पात्र काव्य के पात्रों के रूप में न आकर सजीव 'नर' और 'नारायण' रूप में आते हैं।

'रामचरित मानस' का रूप-विधान गोस्वामी तुलसीदास की विषिष्ट मानसिक संरचना की निर्मिति है। उन्होंने अपनी मेथॅडलॉजी को सूत्रबद्ध या कोडिफाई किया और फिर उसकी अंतर्वस्तु के रूप का निर्धारण किया। उनकी समाहार षक्ति और व्यापकता के कारण मानस का रूप-विधान एक मैजिक फाउंटेन की तरह निर्मित है, जहां से रूप, रस, गंध, षब्द और स्पर्ष का झिलमिल स्वरूप मनमोहक रूप में दिखलायी पड़ता है। इस महाकाव्य में नाटक, महाकाव्य और पुराण की छवियां फाउन्टेन के जल की तरह उर्ध्वमुखी होकर परिवर्ति होती रहती है। मानस का प्रमुख रस षांत रस है। अन्य रसों की योजना प्रभावषाली ढ़ग से की गयी है। रसों की योजना कुछ ऐसी है कि एक ही समय में पाठक एक रस से दूसरे रस में डूबते–उतराते प्रवाहित रहते हैं। संगीत की अभिव्यक्ति 'मानस' से अधिक 'विनय पत्रिका' में मिलती है। अवधी भाषा का ठाठ साहित्यिक भाषा के रूप में जायसी के 'पद्‌मावत' के बाद तुलसी के 'मानस' में दिखता है।

तुलसी ने पूरी ईमानदारी के साथ इस रचना को 'स्वान्तः सुखाय' कहा है, जबकि हम जानते हैं कि एक साहित्यिक कृति एक व्यक्ति द्वारा लिखी जाने के बाद भी व्यक्तिगत नहीं होती वह अधिवैयक्तिक होती है। मतलब उसकी प्रकृति व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही है। इसे ही टी. एस. इलियट ने ''इमपर्सनल'' कहा और लूसिएं गोल्डमान ने ''इंडिविजुअल''। तुलसी ने 'मानस' में प्रकृति के जिन तत्वों और जीव-समूहों के साथ सामाजिक समूहों की व्याख्या की है, उसमें व्यक्तिगत शवनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति नहीं हुई है बल्कि उस सामाजिक समूह के साथ संपूर्ण प्रकृति की अभिव्यक्ति है, जिसमें तुलसी खुद थे।

इस प्रकार तुलसी कृत 'रामचरित मानस' भारतीय जीवन संस्कृति तथा उसके आदर्षों का प्रतिनिधि महाकाव्य है। इसमें आचार, धर्म, नीति, दर्षन, संस्कृति और काव्य साहित्य का उत्कृष्ट रूप मिलता है। 'मानस' में तुलसी की मूल चेतना समन्वयवादी है। उन्होंने निर्गुण, सगुण, षैव, वैष्णव, ज्ञान, भक्ति, निवृत्ति, प्रवृत्ति संबंधी समस्त दृष्टिकोणों को समन्वित कर मानव जीवन के लिए एक स्वस्थ दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। पूरे भक्तिकाल की रचनाओं में यह महाकाव्य उत्कृष्ट और अतुलनीय है।

•

दिनांक : 21/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**